पंचम अध्याय–

गली आगे मुडती है में छात्र–आंदोलन.

1. छात्र शक्ति की पस्त होती हुई मानसिकता।
2. छात्र शक्ति की मानसिक कुंठा।
3. आत्मविभाजीत छात्रशक्ति
4. छात्र शक्ति की साहसीकता
5. छात्र शक्ति की सृजनात्मक उर्जा
6. छात्र शक्ति की संकल्पशक्ति
7. विश्वविद्यालयीन अव्यवस्था के खिलाफ छात्र–शक्ति
8. छात्रों का विध्वंसकारी रुप।
9. युवाशक्ति की क्रान्तिकारीता।
10. निडसेवी बनने की प्रवृत्ति।
11. युवा शक्ति की भविष्य के प्रति उदासिनता
12. आंदोलन में हिंसात्मकता
13. भाषिक आंदोलन के प्रति छात्रों की तीव्र प्रतिक्रिया।
14. नवचेतना से संपन्न प्रतिभाशाली छात्रशक्ति।
15. अध्यापकों के साथ छात्रों का संघर्ष।
16. राजनेताओं का छात्र–आंदोलन में हस्तक्षेप
17. आंदोलनकारी नेताओं की स्वार्थीनीती
18. बाहयशक्ति का छात्रोंपर दबाव

'गली आगे मुड़ती है में' चित्रित
छात्र–आंदोलन : एक मूल्यांकन

आज की भारतीय छात्र शक्ति की मानसिकता कुंठीत बनती जा रही है। देश की आर्थिक और राजनैतिक शक्तियों ने युवा–छात्र–शक्ति को आराजकता की ओर मुड़ने के लिए बाध्य किया है। इसी से आज के युवक "स्मशान सेवी" बनने को मजबूर हैं। आज इस स्थिति में "युवा–छात्र" गुमराह होने से नहीं बच पातें। इसी स्थिति में नशीली वस्तुओं का प्राशन करना छात्र अपना परम कर्तव्य समझते हैं। आज के समाज की वैचारीकता, सैध्दांतिकता और संस्कृति में तेज गति से गिरावट आने लगी है। इस गिरावट के परिणाम स्वरूप आज की युवा–छात्र शक्ति आक्रोश से भर उठी है। आत्मविभाजीत होकर खंडित व्यक्तित्व की निशानी बन चुकी है। आक्रोश से युक्त यह युवा–शक्ति क्रान्तिकारी बनकर सामाजिक गतिविधिओं से टकरा रही है, "नीड–सेवी" बन गई है। युवा–छात्र शक्ति का आत्मविभाजित समुदाय सामाजिक परिवेश के साथ जुडने को तैयार नहीं हो रहा है। आज के युवाछात्र शक्ति के साहस और सृजनात्मक उर्जा को यथास्थिति वादियों ने ठण्डा बना दिया है। आज की छात्रशक्ति भविष्य से उदास बनकर वर्तमान से खीजकर आराजकता की तरफ मुड रही है और सुनहरे भविष्य की कामना करती है लेकिन इसी शक्ति को अन्यायी और आतंकवादी परिस्थितिओं ने घेरकर विद्रोह की तरफ मुडा है। इस छात्र–पीढी को उनके हक और कर्तव्यों से हटा देने के कारण वह एक आक्रोश बन बैठी है। जब युवाछात्रशक्ति के संकल्प को शासन व्यवस्था की भयावह स्थिति को टकराना पड़ता है, तब इस युवा–शक्ति के मन को गहरा सदमा पहुँच जाता है। उनके संघर्ष की धार बोथरी बन जाती हैं या क्रोधित होकर संपूर्ण समाज से अलग हो जाती है। छात्रशक्ति में विद्रोह की शक्ति नकारात्मक नहीं होती। उस शक्ति को सामाजिक मूल्यपरत्व से जोड़ा न जाय तो यह शक्ति केवल निषेध बन जायेगी आज के छात्राआंदोलन स्वार्थाधों की परिधि में अटक गये हैं। यह छात्रशक्ति अपनी अस्मिता को नकारे जाने के कारण संघर्षमयी और सुविधा भोगी बन चुकी है।

आज कल विश्वविद्यालयों में चले विविध आंदोलनो व्दारा छात्रशक्ति के दर्शन हमें होते है। विश्वविद्यालयों में प्रचलित परीक्षा पध्दति, शिक्षा पध्दति, शिक्षा क्षेत्र के पदाधिकारी, सरकार की निति आदि के अन्याय के कारण विश्वविद्यालयों का परिवेश गरम हो रहा है और देश के अधिकांश विश्वविद्यालय आंदोलन के अड्डे बने हुए हैं। इनमें अग्नीकांड, तोड–फोड, मारपीट, घिराव, प्राध्यापक विरोधी संघर्ष आदि विविध पहलुओं के दर्शन होते हैं। ऐसी हालत में आंदोलनकारी छात्र

हिंसक बन जाते हैं, और शहर में आतंक फैला हैं। आंदोलनकारी छात्रों व्दारा पुलीसथाने जलाये जाते हैं और चारों तरफ विध्वंसकारी स्थिति देखने को मिलती है।

साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में छात्र-आंदोलन का विध्वंसकारी रुप विश्वंभरनाथ उपाध्याय के "पक्षधर" 1971, काशीनाथ सिंह के -"आमना मोर्चा" 1972, शिवप्रसाद सिंह के "गली आगे मुडती हैं", 1974 गोविंद मिश्र के "लाल-पीली जमीन", 1974, सुदर्शन मजिठिया के "उखडी हुओ आँधी", 1989, आदि उपन्यासों में देखने को मिलता हैं। इन उपन्यासों के साथ-साथ "अमृत और विष" "भ्रमभंग", लौटते हुए, "अपने लोग" तथा "नयी दिशा" आदि उपन्यासों में छात्रआंदोलन से उत्पन्न कओी समस्याओं का चित्रण मिलता है।

सन 1968 में पूरे विश्व में छात्र-आंदोलन वर्ष मनाया गया। पोलंड, झेकोस्लाव्हकिया, जर्मन, इटली, स्पेन , इंग्लैंड और अमरिका आदि देशों मे छात्रांआंदोलन के कारण भिन्न थे परंतु आज छात्रांदोलनों की समस्याओं ने आंतरराष्ट्रीय रुप ग्रहण कर लिया है। अमरिका के बर्कले, और कोलंबिया जैसे विश्वविद्यालयों में बिभत्स दंगा फसादों का दौर शुरु हुआ था, इस आंतरराष्ट्रीय छात्र आंदोलन की हवा का असर उपर्युक्त हिंदी उपन्यासों पर पडने की संभावना लक्षित होती है।

भारत में अधिकांश विश्वविद्यालयों में छात्रांदोलन आज भयावह रुप धारण कर रहे हैं। सच तो यह है कि - "भारतीय युवाछात्र अपनी अस्मिता को इनकारे जाने के विरुध्द संघर्ष करना चाहता है क्योंकि, भारत की विशाल जीवनधारा में युवावर्ग उस व्दिप की तरह अकेला हो गया है, जिसके चतुर्दिक सुविधाओं की लहर निरंतर तरंगित होती रही है, लेकिन वह व्दिप की तप्त होती हुई बालुकाराशी की तरह संतप्त हैं।" 1 इसीकारण युवाछात्रों की मनोदशा की अनेक शक्लें बनी हैं। भारत में अधिकांश विश्वविद्यालयों में छात्रआंदोलन आज भयावह रुप धारण कर रहा है। अहमदाबाद विश्वविद्यालय, रॉंची विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मराठवाडा विश्वविद्यालय आदि में छात्रआंदोलन हुए है। हिंदी भाषा प्रदेशों में छात्रांदोलन अधिक तेज बनते जा रहे हैं। इसी पृष्ठभूमिपर हम "गली आगे मुडती है" में छात्रआंदोलन की विविध शक्लों पर विचार करेंगे।

शिवप्रसाद सिंह ने "गली आगे मुडती है", 1974 के माध्यम से युवा-छात्र अक्रोश की नाना शक्लों को हमारे सामने रखा है। इससे काशी के संपूर्ण सांस्कृतिक बोध की पहचान होती है। इस आंदोलन से युवाछात्र-शक्ती की उर्जा और पस्त होती हुई मानसिकता का पता भी चलता है। इस उपन्यास में युवाशक्ति की क्रांन्तिकारिता सामाजिक गतिविधियों से कटकर "नीड-सेवी" कैसे बनती जा रही है इसपर लेखक ने गहाराई से चिंतन किया है। रामानंद तिवारी की आत्मभिरुता

और हरिमंगल के साहसी मिजाज से इस आंदोलन की सारी गतिविधियाँ खुल जाती हैं।

आज विश्वविद्यालयों में छात्र भविष्य के प्रति उदास होकर बेहद खीजे हुए दिखाई पडते हैं। यहाँ रामानंद जैसे आत्मभीरु छात्र भी हैं, जो परिवर्तन के लिए जोखिम उठाने को तैयार नहीं हैं। वह देवनाथ से कहता है ---- "ना ना देबू ऐसा मत करना, मैं बाज आया तुम्हारी पइन-पॉलिसी से मेरा रिसर्च करना भी मुश्किल हो जायेगा, भट्टाचार्य महाशयको पता लग गया तो मुझसे बातचीत करना भी बंद कर देंगे।" 2 अर्थात यहाँ रामानंद अनिश्चयवादी मानसिकता से भरा नजर आता है।

रामानंद तिवारी ने छात्रआंदोलन के बारेमें अपने विचारों को स्पष्ट किया है। रामानंद तिवारी जैसे छात्र मनमें छात्र आंदोलन के बारे में आये हुए विचार तीव्र हैं। ये छात्र सिर्फ भाषा आंदोलन का विचार नहीं करते बल्कि आज छात्रोंपर जो अन्याय हो रहे हैं उसके विरोध में आंदोलन करना चाहते हैं। समाज में लोग छात्रों को अपने निजी स्वार्थवश बुरे कर्मो में लगा देते हैं, ताकि वे आंदोलन न कर पाये और अपना स्वार्थ पूरा हो जाय। आज विश्वविद्यालयों के छात्रों को राजनिति में सहायता करने के लिए रुपयों की लालच दिखाई जाती है, और उन्हें राजनीतिक नेताओं के साथ काम करने के लिए बाध्य किया जाता है। उसके बदले में उन्हें पैसों के साथ-साथ इम्तिहान के प्रश्नपत्र परीक्षा के पूर्व ही मिलते हैं। उन्हें मालुम तक नहीं होताकि, वे कौन से विषय में उपाधि ले रहे हैं। आज शिक्षा व्यवस्था भ्रष्टाचारी बनी है राजनीतिक लोगों की हेराफिरी के कारण दिन-ब-दिन शिक्षा-प्रशासन निकम्मा हो रहा है। शिक्षा-व्यवस्था में परिवर्तन अनिवार्य है ताकि, इससे बेकारी की समस्या कुछ कम होगी और जो छात्र गलत रास्ते अपना रहे हैं वे निश्चितरुप से अपने सही रास्तेपर चल सकेंगे। युवा पीढी बिघडती जा रही है, निराश हो रही है, इसी बात का फायदा राजनेता लोग उठाते रहे हैं। इसी व्यवस्था से देश की नींव हिलने लगी है। देश की युवापीढी अगर निराश होगी तो देश का भविष्य अंधःकारमयी बनेगा इसमें जरा भी शक नहीं है। इसी व्यवस्था के खिलाफ छात्रोंव्दारा आंदोलन हो रहे हैं, उनकी आंदोलन की दिशा सही है, मगर राजनेताओं के हस्तक्षेपों से उसे गलत दिशा मिलने लगी है, परिणामस्वरुप आंदोलन असफल बन रहे हैं। ऐसे लोगों का चित्रण बक्कडगुरुव्दारा लेखक ने किया है। बक्कडगुरु रामानंद से कहता है, "देखो तिवारी, यह है तुम्हारा क्रुध्द युवा आक्रोश। 3 इस बातपर व्यंग्य फसते हुए तिवारी कहता हैं - "और यह हैं आपकी ट्रेनिंग और युवा को पालतू कुत्ता बनाने का तरीका।"4 जर्सियस जैसे युवक बक्कडगुरु के गैरकानूनी कार्य में सहकार्य करते हैं। यहाँ बक्कड गुरु जैसे लोगों की स्वार्थवृत्ति का बोध होता हैं वे अपने स्वार्थ के लिए

युवकों के भविष्य से खिलवाड कर रहे हैं।

रामानंद तिवारी हिंदी भाषा आंदोलन आवश्यक मानता है। विश्वविद्यालयों के छात्र-संगठन ने यह आंदोलन भाषा-विषयक सरकारी निति के खिलाफ खडा कर दिया था। हमारी सरकार कई गलत घोषणाएँ करके छात्रों को आंदोलन के लिए बाध्य करती है। हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा की मान्यता देकर भी उसकी कार्यवाही पूरी नहीं कर सकता देवनाथ कहता है - "हिंदी प्रदेशों की जनता को लगा कि, पुनः एक बार हिंदी के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है और उसे हमेशा हमेशा के लिए कामकाज की भाषा के दरजे से बरखास्त किया जा रहा हैं।[5] लेकिन सुबोध भटट्चार्य ऐसे आंदोलन से सहमत नही है। वे तिवारी से कहते है जो नेहरु, शास्त्री नहीं कर सके तो इस आंदोलन से क्या लाभ हैं? तुम लोगों को इस आंदोलन से क्या मिला। लेकिन रामनंद "जगरुप" का उदाहरण ध्यान में लेकर हिंदी की आवश्यकता मानता है। रामानंद तिवारी के रुप मैं अनिश्चवादी युवा-शक्ति आंदोलन में होनेवाली तोड-फोड, लूटमार का विरोध करती है। चित्तरंजन पार्क में होनेवाली हानि रामानंद तिवारी को पसंद न होने के कारण वह चित्तरंजन पार्क में होनेवाली सभा में उपस्थित नहीं रहा। छात्र संगठन व्दारा डॅा. भट्टाचार्यजी को घिराव डालना, उन्हें पीटने की तैयारी करना, देवनाथ व्दारा उनकी मुक्ति करना आदि घटनाओं से रामानंद उदास हुआ है। वह सोचता है कि, यह आंदोलन गलत रास्ते से जा रहा है। रामानंद को इस आंदोलन के बारे में भट्टाचार्य जी के व्दारा अभिप्राय पूछने कहता हैं ---- "यह आंदोलन गलत था सर?" तभी भट्टाचार्यजी कहते हैं - "यह आंदोलन आंदोलन की आवश्यकता महसूस नहीं करता। अंग्रजी हटने से देश में बेकारी की समस्या समाप्त नहीं होगी। यह आंदोलन गलत ढंग से चलाया और निष्फल हुआ। हमारी युवा शक्ति की सबसे बडी कमजोरी यह है कि, वह अदृश्य मार्ग से टकराने का रास्ता नहीं जानती।"[6] भट्टाचार्यजी ने समझाा दिया कि, यह आंदोलन गलत था। जयंती युवाछात्र आक्रोश की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए कहती हैं - सारा युवा आक्रोश सेक्स में ही सिमटकर रह गया है। आक्रोश के नाम पर शराब और सैक्स ये दो ही लक्ष्य रह गये हैं।" अंत में रामानंद आंदोलन को सही दिशा की आवश्यकता महसूस करते हुए कहता हैं कि, "जरुरत यह हैं कि हम अपने देश में अंग्रजी अधिपर्तय हटाना चाहते हैं। अंग्रजी मुट्ठी-भर जादूगरों की भाषा है। अंग्रजी के रहते हमारी संस्कृति और सभ्यता ही नहीं रोजी-रोटी सब-कुछ बंधक हो गयी हैं।"[7] भाषा के साथ पाश्चात्य संसकृति की ओर भारतीय लोग खिंचे जा रहे हैं। संसकृति और भाषा का नजदिक का रिश्ता है। अपनी संस्कृति और अध्यात्म को घटिया बताया जा रहा है। धर्म ओर संस्कृति को

भूलकर लोग पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं।

हिंदी भाषा के साथ शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन आवश्यक हैं। हमारी शिक्षा पध्दति में परिवर्तन आवश्यक हैं क्योंकि, ऐसी शिक्षा से हम अपनी रोटी नहीं कमा सकते। श्रीकान्त एक ऐसी स्थिति में फँसा हुआ छात्र है जिसने गरीबी में एम्.ए. की उपाधि हासिल की है। मगर उसे कहीं नौकरी नहीं मिल रही हैं। वह पागल हो जाता हैं, उसे रातदिन यहीं विचार काटने लगता है कि, क्यो पढे? किसलिए पढे?। वह पागल होनेपर भी शिक्षा के बारे नें घृणा से सोचते हुए कहता है "क्यों बैठू? आप क्या प्राइम मिनिस्टर हैं? क्या आप राष्ट्रपती हैं? आप क्या लाट गवर्नर हैं? आप कुछ नहीं हैं। आप फटीचर हैं। आप उल्लू हैं। आप गद्ये हैं। आप किसी काम लायक नहीं हैं। आप पढ़ लिखकर बुध्दू हो गये हैं। आप दूसरों की कमाई की रोटी तोडनेवाले लुच्चे आदमी हैं।[8] हमारी शिक्षा व्यवस्था में राजनीतिक नेताओं का हस्तक्षेन होने के कारण शिक्षा व्यवस्था को बाजारु रुप आया है। छात्र परीक्षार्थी हो गए हैं जिन्हें सिर्फ उपाधि से मतलब है। इसीसे आनेवाली युवापिढ़ी बिघड़ती जा रही है। देश का भविष्य खतरे में पडने लगा है। छात्रों को समस्याओं के कारण है विश्वविद्यालयों में प्रशासनीय गुटबंदी, अन्यपस्थित शैक्षिक व्यवस्था, सामाजिक एवं आर्थिक अव्यवस्था, अपर्याप्त सुविधा, शिक्षा स्तर में गिरापट, अधिकारियों और अध्यापकों की प्रतिष्ठा में कमी, यथोचित वातावरण का अभाव, सामजिक समस्या और सैध्दांतिक नैराश्य विश्वविद्यालयों के कार्य में राजनितिक हेराफेरी आदि कारणों से छात्रों की समस्याएँ बढती जा रही हैं जिसका परिणाम पूरे देशपर पड़ता हें। इसी परिवर्तन के लिए आंदोलन आवश्यक हैं।

देबू, रमेंद्र जैसे छात्र समाज से दूर जा रहे है, हिंसा की ओर बढ़ रहे हैं। इसके लिए वे लोग जिम्मेदार हैं, जो अपने स्वार्थ के लिए युवकों को गलत रास्तों पर चलने के लिए मजबूर करते हैं। बक्कडगुरु ऐसे लोगों का एक उदाहरण है। इसी कारण छात्र हिंसक बनते हैं। छात्रांदोलन अहिंसक होकर भी उसे हिंसा का रुप मिलता है। देवनाथ जैसे कअी युवक छात्र आज के विश्वविद्यालयों में नजर आ रह हैं जो टूटेंगे परंतु झुकेंगे नहीं वाली अति विद्रोही प्रवृत्ति रखते हैं। देवनाथ रामानंद तिवारी की आलोचना करते हुए कहता है – "चुल्हे भाड में जाये तुम्हारे भट्टाचार्य और तुम। ससुरे कोई भी दुरुस्त काम करने चलो, तुम्हारी हिम्मत रफूचक्कर होने लगती है। मरो, मरो इस कबूतखाने में मरते जाओ, जिसे जगदगुरु हिंदुस्तान कहा जाता हैं।" 9 देवनाथ जैसी युवा शक्ति में प्रतिशोध लेने की तीव्र प्रतिक्रिया होती हैं। वह रामानंद से कहता है

--- अरे जाहिल तू यदि इन सफेदपोश, बेईमानों, लुच्चे राजनीतिज्ञों और झुके मक्कार लोगों से बदला नहीं लेगा तो जी न पाऐगा| जीएगा मगर वह हजार मौत से भी बुरी जिंदगी होगी।' [10] देवनाथ जैसे युवक "जिना हैं, तो यों जिओ, याद जो करे सभी" के अुनसार जीना चाहते हैं और रामानंद को भी आंदोलनकारियों की मीटींग में शामिल होने की सूचना देते हैं।

आज के युवा-छात्र आंदोलन हिंसक रुप धारण करते जा रहे है, उसमें तोड-फोड, लूटपार, अग्निकांड, मार-काट पर जोर रहता हैं। 26 अगस्त, 1967 को राजभाषा विधेयक के विरोध में वाराणसी में पूरी हडताल रही। युवा छात्र शक्ति ने कैट स्टेशनपर छ, घंटों तक कब्जा किया, ट्रेनों की आवाज ही रुक गई, अंग्रजी नामपट तोडे, मोटरों पर के अंग्रजी अंक मिटाये। जिन्होंने अंग्रजी के साईन बोर्ड निकालने विरोध किया उनका मुँह काला कर दिया, रेल विभाग के पार्सल कार्यालय के सामान को बिखेर दिया, फलों की टोकरियाँ साफ की, सिगरेट के बंडल लूटे, अंग्रेजी के साईन बोर्ड तोडे गए। इस जुलूस को पुलिस की निर्ममता ने ही हिंसात्मक बनाया। पुलिस कार्यवाही अमानवीय होने का कारण आज तक अनेक जुलसों ने हिंसात्मक रुप धारण किया है। जुलुस के न हटने पर पुलिस ने अश्रु गैस के गोले गिराये, छात्रों में भगदड मची, छात्रों ने पथराव शुरु किया, पथराव बंद न होने की संभावना पाकर पुलिस के जवानों ने गोलियाँ चलाना शुरु किया, घरों की खिडकियाँ बंद होने लगी, भाग-दौड शुरु हुई, चारों तरफ से रोने-सिसकने की आवाजें आ रही थीं। छात्र पिटे जा रहे थे। उन्हें गिरफ्तार किया जाने लगा। हरिमंगल पर गोली चलाई गयी। हरिमंगल शेर था और शेर की तरह मरा। भारतीय युवा - शक्ति की एक शक्ल हरिमंगल के रुप में भी सामने आती हैं जो अपने ऊपर होनेवाले सरकारी अन्याय को मिटाने के लिए मर मिटती है। छात्र नेता देवनाथ कहता हैं "हमारा प्रदर्शन अहिंसक है। हम जनतंत्र का गला घोटनेवाली सरकार को सावधान करना चाहते हैं कि, वह हमसे टकराने की कोशिश न करे।"**11** सचमुच आज छात्र सेना की मजबूत दीवारों से टकराना खतरनाक हैं।

सन 1965 में राजभाषा हिंदी की घोषणा सरकारव्दारा की गयी लेकिन बंगाल, तामिळनाड आदि ने इस घोषणा का विरोध किया। क्योंकि, बंगाल का साहित्य ज्यादातर बंगाली भाषा में है अगर हिंदी राजभाषा बनी तो उनके साहित्य का महत्त्व कम होगा। तामिळनाडु के लोग ज्यादात्तर अँग्रेजी को चाहते हैं और उन्होंने अंग्रजी के बलपर सरकारी क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त किये हैं। राजभाषा हिंदी बनने से उन्हें हानि पहुँच सकेगी इसलिए इन्होंने हिंदी का विरोध किया और 1965 में पहला हिंदी विरोधी आंदोलन शुरु हो गया। अन्त में लालबहादूर

शास्त्रीव्दारा "त्रिभाषा सूत्र" की घोषणा की गयी लेकिन आज अँग्रेजी का वर्चस्व बढ़ रहा है, और हिंदी के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है, और उसे हमेशा-हमेशा के लिए सरकारी कामकाज की भाषा के दरजे से बरखास्त किया जा रहा हैं।

शिवप्रसादजीने "छात्र शक्ति" के दर्शन, इस उपन्यास में करवाये हैं। "छात्र" एक शक्ति है, इस नयी पीढी के हाथ में देश का भविष्य है। भले ही वे हाथ अभी कमजोर हैं लेकिन क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं है, कि उनकी कमजोरिओं को समझे, उनके कारणों को पहचाने और उन्हें सही दिशा देने की कोशिश करें। ऐसी कोशिशों से छात्र आदर्श बनने के लिए देर नहीं लगेगी। "वास्तव में हीन उद्देश्य और उद्देश्य हीन होना छात्र आंदोलन की सबसे बडी कमजोरी है" p.[12] वे किसी बडे उद्देश्य से अपने असंतोष को जोड नहीं पाते हैं। परीक्षाओं में होनेवाले पक्षपात, छात्रवृत्तियाँ उपलब्धियों में राजनीति और स्थानीय गुटबंदी आदि बातों को लेकर छात्र क्रोधित होते जा' हैं। जिसका शिकार अध्यापक भी बनते होते जा रहे हैं। ऐसे छोटे-छोटे स्वार्थो में छात्र आंदोलन बिखरकर बुझ जाते हैं।

वाराणसी में यह पहला हिंदी भाषा आंदोलन हुआ। भाषा के विरोधी, भ्रष्टाचार, बेकारी, गरीबी, कुशासन आदि के विरोध में चलाया गया यह छात्र आंदोलन प्रचंड शक्ति का प्रतीक है। जिसका अर्थपूर्ण चित्रण इस उपन्यास में आया है। लेखकने तिवारी और भट्टाचार्यजी की बहस को स्पष्ट करते हुए छात्र आंदोलन को स्पष्ट किया है। फिलाडेल्फिया के कण्ट्रैक्टर बक्कडगुरु को युवा आक्रोश समाप्त कर सका है। हरिमंगल युवाछात्र आक्रोश का नेता बनकर उसे नष्ट करते हुए स्वयं मिट जाता हैं। वह छात्रों के सामने आदर्श के रुप में आता है। वह अपने जीवन को उक्त बोध से मुक्त करके राष्ट्रद्रोहिंयों का निर्मूलन करने के लिए सचमुच अपने आप को उत्सर्ग कर देता है। क्रुध्द युवापीढी का आदर्श हरिमंगल है।

रामानंद तिवारी ऐसे छात्रों के रुप में हमारे सामने आता है जो अपने जीवन में आये दु:खों से टकराते हुए आगे बढ रहा है। पिता व्दारा छोडनेपर माँ और बहन को लेकर छात्रवृत्ति के भरोसे राजेश्वरी मठ में रहता है लेकिन विश्वविद्यालयीन गंदी राजनीति ने उसके गले पर ऐसी छुरी चलायी जिससे वह ऐसा लडखडाया कि, उठ नहीं सका। रिसर्च, नेतृत्व, और प्रेम आदि तीनों क्षेत्रों में वह असफल रहा। युवाछात्र आक्रोश खोखला निकला, छात्रनेता के नामपर गुंडे निकले जिन्होंने आरती का अपरहण किया। छात्रआंदोलन के छात्र नेता स्वार्थी डरपोक

और हासिलवादी होते हैं। इस पर प्रकाश डालते हुए रामानंद तिवारी रज्जो से कहता हैं – "सब साले नकली बहुरुपिया हैं। सभी स्वार्थी और डरपोक हैं।"[13] इन सभी घटनाओं से वह टूट गया और सबसे ज्यादा टूटन उसकी प्रेम की असफलता हैं। बंगली युवती जयंती और गुजराती किरण दोनों उसकी होकर भी नहीं हुई। उसका उभरता हुआ आरंभिक तेजस्वी रुप भ्रष्ट और जड सामाजिक शक्तियों से कराकर चूर हो जाता है। परंपरा के बीच सबका सामना करना चाहता हैं, मगर वह न परंपरावादी रह सका और न आधुनिक बन सका। यह जीवन का अधक–चरापन कितना भयावह है इसलिए देश में क्रान्ति नहीं हो सकी, विद्रोह बुझ गया और सेक्स में डुब गया। "यत्र–तत्र बिखरी, कुछ अतिरिक्त सी भी लगनेवाली, भाषाच्छन्न अभिव्यक्तियों के पीछे सुविधा परस्ती भरी सामाजिक गंदगी का अज्ञात दबाव है, आनंदानुभूति नहीं, विषम स्थिति है, जिसमें इस देश का युवा वर्गजी रहा हैं, यही आश्चर्य हैं।"[14]

इस उपन्यास में छात्रों की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। परंतु छात्र आंदोलन और उनकी समस्याओं को अग्र स्थान दिया है। इस उपन्यास में चित्रित छात्र आंदोलन की दिशा सही है, मगर राजनेता और बक्कडगुरु जैसे लोगों के हस्तक्षेप से यह आंदोलन असफल बना है। ये आंदोलन न सिर्फ काशी में चालये गये बल्कि पूरे विश्वभर चलाये गये है। केवल इन आंदोलनोंके कारण विभिन्न हैं। बर्कले, बर्लिन और पेरिस के छात्रों के आंदोलन का कारण मनोवैज्ञानिक माना गया है। पाश्चात्य छात्र संघर्ष को समाजशास्त्रीय आलोचना अधिकांशतः पुरानी पीढी के बुध्दिजीवियों की प्रतिक्रियावादी दलालों पर ही आधारित रही है। छात्रों के पुराने मानवतावादी एवं स्वच्छंदतावादी वैचारिक परिवर्तनों और उत्क्रमणों के बावजूद ऐतिहासिक निरंतरता की ओर संकेत करते हैं। आंदोलन तब बढ़ता हैं, जब नयी पीढी पुरानी पीढी के विचारों का निरीक्षण करती हैं। अमरिका, इंग्लैंड, पोलंड, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया जैसे बडे–बडे देशों मे भी छात्र आंदोलन और छात्र अशान्ति की खबरें छपी जा रही थी। यह सही है कि, इन आंदोलनांके कारण अलग–अलग थे। किसी विश्वविद्यालय में पाठयक्रम परिवर्तन को लेकर तो किसी विश्वविद्यालयमें शिक्षा को अधिक रोजगारभिमुख बनया जाय आदि को लेकर आंदोलन खडे किये गये थे। आंदोलक युवकों के साथ सलूक भी ठिक नहीं किया जा रहा था। युवकोंकी चाहत को नहीं देखा जाता था, सिर्फ दंगा–फसादों को नजरांदाज किया जाता था। जब पी.ए.सी . के लोगों व्दारा छात्रों को

गिरफ्तार करके उन्हें मारपीट की जाती है तब एक छात्र कहता है – "हम गिरफ्तारी कराने नहीं, जनता तक अपनी आवाज पहुँचाने चले हैं। इस शान्त जुलूस से छेड–छाड करना अधिकारियों के हक में अच्छा न होगा।"15 फिर भी पुलिस फायर। फायर। करके और गोलियाँ चलाने लगी। चारों तरफ बच्चों ओर औरतों की रोने की आवाज शुरु हुओी। चारों तरफ भय का आंतक, मृत्यु का तांडव–नृत्य शुरु हुआ। पुलिस अधिकारी छात्रोंकी बेरहमी से पीटाई करते रहे। परिणामतः आंदोलन को हिसंक दिशा मिलती रही।

शिवप्रसादाजीने तिवारी को नवचेतना संपन्न प्रतिभाशाली छात्र के रुप में प्रस्तुत करके संस्कृत के छात्र के प्रचालित बिम्ब को तोड दिया हे। तिवारी नयी चेतना लेकर छात्रों का प्रतिनिधित्व करता है। वह सभी बुरे कार्यों को मिटाना चाहता है मगर कभी–कभी उसकी आंतरिक शक्ति दुर्बल बन जाती है और वह अपने को धिक्कारता हे। हरिमंगल के मरने के बाद उसे बहुत दु:ख होता है, वह कहता है – मैं बक्कडगुरु हरिमंगल को बचा सकता था, मगर मेरे मन के डर ने मुझे रोक दिया परिणामस्वरुप हरिमंगल को जान से हाथ धोना पडा। वह कहता हैं – "--- जो कुछ करना होता, वह मैं अब तक कर चुका होता, वस्तुतः मेंने अपनी पारीवारिक स्थितियों और संस्कारों के कारण अपने को तल्ख स्थितियों से बहुत अलग कर लिया हैं। मैं सुविधा पसंद लीक पर चलते रहनेवाला आदमी बन गया हूँ।16 रामानंद रज्जो के बारे में हुए व्यभिचार के विरोध में लड़ना चाहता है, भारती की समस्या हल करना चाहता हैं। उन्होंने समाज के लोगों की असलियत जान ली है, ऊपर से मीठा बोलनेवाले लोग अंदर से ज्यादा खतरनाक मालुम होते हैं। वह समाज विघातक कृत्यों को जला देना चाहता है। बक्कडगुरु जैसे देश प्रेम का खोखला प्रदर्शन करनेवाले लोग युवकों को अपने काम में उलझाते ताँकि वे युवक उनके कार्यों में दखल न दे और उनका कुकर्म चलता रहे। हरिमंगल भी ऐसे छात्रों का नेतृत्व करता है, जो अपने अन्याय को मिटाने के लिए मरना भी पसंद करता है। वह विद्रोही छात्र है, उसकी नौकरी चली जानेपर भी वह समाज के सभी लोगों को न्याय देना चाहता है, इसके लिए वह आखरी दम तक लडता है।

भाषा के बलपर शासन व्यवस्था, न्यायव्यवस्था, सरकारी, प्रशासकीय कार्यालयों में लोगों को लूटा जाता है। लोग प्रशासकीय अंग्रजी भाषा को नहीं जानते और करोडों लोग उसके जाल में फँस जाते हैं। किसानों को झूठे कागज दिखाकर गुमराह किया जाता है। समाज में रहनेवाले और अपने आप को ईमानदार कहने वाले लोगों की पोल खोलने का प्रयास हरिमंगल व्दारा लेखक शिवप्रसादजीने किया हे।

दक्षिण भारतीय संसद–सदस्यों के दबाव में आकर राजभाषा विधेयक पास करते समय नेहरुजी के वचनों की याद दिलाकर माँग की गयी कि, हिन्दी के साथ अँग्रेजी भी चलती रहे। तब तक चलती रहे जब तक अहिंदी राज्य उसे बंद करने को न कही। अंत में बहुत दिन के बाद हिंदी को रोमन अंकों के सहित राजभाषा बनायी गयी पर यह सिर्फ कागजों तक ही सिमित रह गयी अहिंदी भाषी राज्यों को पंद्रह बरस का अवसर दिया गया, ताँकि वे लोग कामचालऊ हिन्दी सिख सके लेकिन फिर से पाँच बरस बढा दिये गये फिर भी आज तक इस देश में हिंदी प्रशासकीय भाषा नहीं बन सकी। देबू कहता है "जाहिर है कि, अँग्रेजी और हिंदी को यदि एक जुए में जोत दिया जाये तो इस देश में जिसका शासन–तंत्र अब तक अंग्रजीदां लोग ही चला रहे हैं, हिंदी हमेशा दबी रह जायेगी और अंग्रेजी का विलायती बुलडोजर हिंदी को दबोच लेगा या हमेशा के लिए बैठा देगा।"[17]

27 नवंबर को हिंदी को राजभाषा बनाने की बात पर अनुमती प्राप्त करने के लिए संसद में मतदान हुआ पहले तो इंदिराजीने विरोध में मत डाला लेकिन बाद में अपनी गलती सुधारली और विधेयक पास होने के पक्ष में मत डाला। सिर्फ अहिंदी भाषा राज्योंके बीच पत्र व्यवहार की भाषा अँग्रेजी रखी गयी और परराष्ट्रके बीच पत्र–व्यवहार की भाषा अँग्रेजी रखी गयी। लेकिन पुनः हिंदी को छोड दिया गया शासन-व्यवस्था की भाषा फिर अँग्रेजी में शुरु हो गयी और हिंदी को हमेशा के लिए सरकारी कामकाज की भाषा के दरजे से बरखास्त किया गया। इसी बात को लेकर 28 नवंबर, 1967 को वाराणसी में हडताल शुरु हो गयी, राजभाषा विधेयक के विरोध में आंदोलनों ने उग्र रुप धारण किया। सभी कॉलेज, बाजार बंद कर दिये गये। छात्रों द्वारा स्टेशनपर कब्जा किया गया। कुछ समय के लिए ट्रेनों का आना–जाना रुक गया। शहरों मे लगाये गये अँग्रेजी साईन बोर्ड निकाले गये, जो लोग इसे विरोध करते उनके मुँह काले किये गये। जहाँ अंग्रजी नेमप्लेट तोडकर छात्रों ने गलत रास्ता अपनाकर दुकानों से सिगारेट लुटे, फल की टोकरियोंको साफ किया । अंत में छात्र नेताओं व्दारा भाषण दिये गये और इस आंदोलनों को रोकने के लिए पुलिसव्दारा गिरफ्तारीयाँ शुरु हो गयी। आंदोलन को गलत दिशा मिल गयी हें। आंदोलन सही दिशा छोडकर गलत दिशा की ओर मुडा। पुलिसव्दारा छात्रों पर गोलियाँ बरसा दी, छात्रों की कतारें तोड गयी। पुलिस के ऐसे कारनामों से छात्रों में ज्यादा विद्रोह बढ गया और आंदोलन में हिंसात्मकता बढती गयी। आज की युवाशक्ति उदास बनकर वर्तमानपर खीज प्रकट कर रही है।

इस सिलसिले में डॉ. रामविनोद सिंह का कथन चिंतनीय लगता है – "दरअसल विद्रोह

विघटनात्मक नहीं होता बल्कि वह एक मूलपरक दृष्टि है, विद्रोही के मूल्यवादी दृष्टिकोन से कहा हुआ विद्रोह किसी निश्चित पर पहुँच नहीं पाता। ऐसा विद्रोह असंगत और भ्रमित हो जाता हैं।" [18] रामानंद तिवारी की अनिश्यवादी मानसिकता मूल्यविहीन संघर्ष का परिणाम है।

छात्र अध्यापाकों के साथ अपनी निजी स्वार्थ के लिए संघर्ष करते हैं, उन्हें धमकियाँ देते हैं। वे यह नहीं सोचते कि, क्या हम जो कर रहे हैं, वह सही है या गलत? रज्जो ठिक ही कहती है – "चाहे समाजवाद हो, चाहे साम्यवाद हो लडकी की इज्जत से खिलवाड करनेवालों से मोरचा लेने में क्या हासिल होगा। युवा आक्रोश की यह सारी लड़ाई हासिलवाद की लड़ाई हैं, सुविधा पाने की छटपटाहट है और कुछ नहीं। तंग पाजामें के नीचे सभी जानवर हैं।[19] सिर्फ नारे लगाने से कुछ नहीं होगा। छात्रों मे श्रम करने की इच्छा नहीं होती वे कम श्रम में ज्यादा धन हासिल करना चाहते हैं, अधिक अंक प्राप्ति के लिए वे अध्यापकों को धमकियाँ देते हैं। सुबोध भट्टाचार्यजी को शुक्ला कहता है – "मैं कुछ नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि, कापियाँ आपने देखी है ओर आप ने अन्याय किया है, जिसका नतिजा बुरा होगा।[20]" इसतरह छात्र अध्यापकों के साथ नेतागिरी के अंदाज मे पेश आते हैं। लेकिन सुबोध भट्टाचार्यजी जेसे बहुत कम लोग हैं जो छात्रों के इशारे पर नाचना पसंद नहीं करते हैं।

लेखक को युवाछात्र–शक्ति और उनके आंदोलनों के प्रति पूरी सहानुभूति है , मगर उनके खोखलेपन तथा मूल्यहीनतापर क्रोध भी है। किसी भी समस्या को हल करने का प्रयास जरुर होता चाहिए परंतु यहाँ यह तो नहीं हो रहा सिर्फ ऊपरी बातोंको नजरांदाज करके छात्र आंदोलन कर रहे हैं। आजके छात्र सही समस्या को समझकर न वे मूल प्रश्न को समझ सकते हैं ओर न उसकी ओर गंभीरता से देखते हैं। रामानंद छात्र नीतिसे आकर छात्र–नीति पर व्यंग्य करते हुए कहता है " --- और उसी को समाजवादी कहते हैं? अंधेर और अन्याय, धोका और प्रवंचना सुविधा और स्वार्थ – क्या यही हमारा एकमात्र लक्ष्य नहीं है देबू, जिसे हम समाजवाद का नाम लेकर पूरा करना चाहते हैं"[21] रामानंद तिवारी युवाछात्र शक्ति के आंदोलन को गलत एंव गुमराह बताता हुआ कहता हैं – "यह भी कोरा भ्रम हैं देबू। रहा होगा मजदूर, किसान के बाद छात्र तीसरी शक्ति। कभी रहा होगा। आज वह अपनी मजबुरियो के कारण क्षणिक सुविधा और लिप्सा के कारण बिक चुका है। जो नहीं बिके हैं वे परीक्षाएँ पास करके बेरोजगारी के शिकारी हो रहे हैं। विदेशी सभ्यता की नकल की बाढ ने हमारे भीतर के गटर को रुंघ दिया है, और हम उसी गंदले गलीज में डुबकियाँ ले रहे हैं। छात्र आज अपने लक्ष्य को ही भूल गया है। वह गिरवी हो गया है, उसमें न एकता हैं न कोई सही दिशाज्ञान"[22] यहाँ छात्रों की गलत नीति, स्वार्थी प्रवृतितपर प्रकाश डाला है। आज की युवा शक्ति को अनेक शक्तियाँ अपने स्वार्थ के लिए साधन बनाती हैं। परिणामस्वरुप छात्रशक्ती की नीति पतनोन्मुख

बनती जा रही हैं। छात्र फैशन के नामपर शराब, सिगारेट पीना, होटलों मे जाना, ग के साथ बैठना आदि में अपनेआपको श्रेष्ठ मानते हैं। छात्रों का धर्म वे भूल गये । लोगों को समाज के सामने लाकर उनका पर्दाफाश शिवप्रसादजीने किया है। फिर भी और तिवारी जैसे छात्रों से आदर्श समाज बनाने की आशा रखी है। छात्रों को सही दिशा देने के साथ-साथ छात्रों में सुधार लाने में यह उपन्यास मदद करता है। किसी भी बुरी प्रवृत्ति को ध्वस्त करो बुरे आदमी को मत ध्वस्त करो यही संदेश इस उपन्यास से छात्र-शक्ति को मिलता है। क्रान्ति करनी चाहिए मगर सही दिशा से। इस उपन्यास के बारे में डॉ. अंजील तिवारीजी कहती है - " रामानंद के जीवन का संघर्ष, छात्र जीवन के विविध आयाम, आरती का प्रेमविवाह और असफलता की पीडा, हरिजनों के जीवन की समस्या आदि कुछ ऐसी समस्याएँ हैं, जिन्हें आपस में बुनकर एक ऐसे बनारस और बनारस के माध्यम से भारत का चित्र उभारा जा सकता था, जो आज होता और प्रभाव में अधिक संश्लिष्ट और गहरा होता।"[23]

निष्कर्ष :

आज छात्रों के व्दारा चलाये गये आंदोलन हर देश के सामने एक चुनौति बन गये हैं। छात्र आंदोलनों का असर समाजजीवन के साथ राजनैतिक गतिविधिओं पर गहरा पडता जा रहा है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भी छात्रों का ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। आज अन्याय अत्याचार, सरकारी नीति की कमियों के खिलाफ देश के कोने-कोने में छात्र आंदोलन उभरने लगे हैं। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में शिक्षा क्षेत्र की कमियों के खिलाफ आज आंदोलन खडे हो रहे हैं। भारत में वर्तमान शिक्षा पध्दति के खिलाफ तथा ऋग्ण नाकामयाब शिक्षा-पध्दति के खिलाफ आरक्षित जगाहो के खिलाफ आंदोलन शुरु है। आज विश्वविद्यालयीन छात्रों की उग्रता, विद्राही भावना अधिक बढ़ती जा रही है। इसका कारण वर्तमान स्थितियाँ ऐसी बनती बिगडती जा रही हैं कि जिससें छात्र उकसाये जा रहे हैं। छात्रों के वास्तविक जीवन के और विश्वविद्यालयीन शिखा के बीच एक खाई निर्माण हो चुकी हैं। बेरोजगारी, राजनीतिक नेता का भ्रष्टाचार, आरक्षण के कारण गुणक्तापर आयी आँच, पुरानी संसकृति की रुढीप्रियता आदि के कारण आधुनिक छात्र-शक्ति गडडमड्ड होने लगी है। अराजकता की स्थिति को निपटाने के लिए छात्र शक्ति संगठित होकर आंदोलन की तैयारियों में लगी है। उनमें स्थित विद्रोह बढने लगा है। उनकी शांती, अशान्ति का रुप धारण कर रही है। छात्र शक्ति हिंसक बनने लगी है। छात्र आंदोलनोंको शांति में परिवर्तित करने के लिए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और

धार्मिक स्थितियों में परिवर्तन आवश्यक है। आज राममंदिर–बाबरी मसजिद, मंडल आयोग, जातीय भेदा–भेद -`, सांप्रदायिकता को लेकर खडे हुअे आंदोलनों में छात्र–शक्ती विध्वंसक बनती हुअी नजर आ रही है। किसी विश्वविद्यालय को किसी युग पुरुष का नाम देने से विश्वविद्यालय की गुणवत्ता में कोई फर्क नहीं पड़ता फिर भी ऐसे विवादास्पद प्रश्न खडे करके छात्रों को उकसाने का काम आज हो रहा है। "गली आगे मुडती है" का आंदोलन भाषिक आंदोलन है फिरभी इसके साथ–साथ आंदोलनकारी विश्वविद्यालयों में स्थित अनेक अनहोनियाँ को भी प्रकाश में लाने का काम किया गया हैं। इस उपन्यास का आंदोलन शुरु–शुरु में सही दिशा पररहा है। सन 1965 में सरकारव्दारा संविधान में हिंदी राष्ट्रभाषा विधेयक पारित करने के उपरांत कई लोगों ने विरोध किया। इस हलात में छात्रों ने इस अन्याय के खिलाफ यह भाषिक आंदोलन खडा किया। सही राजनेतओं के हस्तक्षेपों से छात्रों के आंदोलन की सही दिशा बदल गयी। आज समाज विघातक कार्यो के खिलाफ आंदोलन खडे हो रहे हैं। यहाँ लेखक ने इन छात्रों की गलतनीति मूल्य विहीनता पर दु:ख व्यक्त करके छात्रों के आंदोलन में तोड–फोड, अग्निकांड आदि को अवैध घोषित किया है।

इस उपन्यास में युवाछात्र आक्रोश की विविध शक्लों पर प्रकाश डाला है। युवा–शक्ति छात्रों के बिखरते हुए भावबोधों, युवाछात्र–शक्ती की गति और स्थिति में गुणात्मक परिवर्तनों, छात्र शक्ति में निरंतर बढ़ती गिरावटों आदि के साथ साथ शिवप्रसादजी ने युवा शक्ति में निहित रचनात्मक उर्जा, अन्यायी ओर आततायी स्थितियों के व्दारा युवा–शक्ति को डाला गया घिराव, आततायी स्थितियों के खिलाफ छात्रों का विद्रोह, छात्रों के बीच की संकल्प–शक्ति, राजनीति के साथ छात्रों की सकल्प शक्ति की टकराहट, छात्रों के बीच बढती हुअी मूल्यहीन संघर्ष की प्रवृत्ति आदि युवा–छात्र आंदोलन के विविध दृष्टिकोनों पर लेखक ने गहराई से चिंतन करके रामानंद तिवारी की अनिश्यवादी मानसिकता को मूल्यहीन संघर्ष की मानसिकता को मूल्यहीन संघर्ष की उपज मानी है। वास्तव में रामानंद तिवारी में वैचारिक शक्ति का प्राबल्य होकर भी वह आंधी में उडते हुए तिनके की तरह भटकता रहता है। भारतीय छात्रआंदोलन की यह एक शक्ल यहाँ नजर आती है।

छात्रों की यह सारी लड़ाई सुविधा भोग के लिए है। लडाई या संघर्ष जब भावनात्मक स्तर पर खडा रहता है तब साहसी छात्रों के मन की भी हत्या होती हैं। हरिमंगल जैसे साहसी मन की हत्या इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है। हरिमंगल की असफलता और रामानंद की भीरुता भावनात्मक स्वीकार का ही परिणाम लगता है। शिवप्रसाद सिंहजी का उपन्यास "गली आगे मुड़ती है" युवा–छात्र शक्ति अंधेरे की चीख महसूस होता है। आक्रोशजन्य युवाछात्र–शक्ति की विविध शक्लों को उसकी संपूर्णता में देखने के लिए यह उपन्यास कमाल की सफलता प्राप्त कर चुका है। लेखक ने इस उपन्यास में काशी नगरी के सांस्कृतिक बोध की पहचान के साथ–साथ युवा–छात्र शक्ति की

उर्जा और उसकी पस्त होती हुओ मानसिकता की पहचान भी हमें करा दी है। यह उपन्यास आठवें दशक का एक विशिष्ट उपन्यास माना जा सकता है। युवा-छात्र-शक्ति पर हावी होनेवाला आत्मसंकट, सामाजिक बदलाव की स्थितियाँ सत्ता और छात्र-शक्ति के बीच का संघर्ष, छात्रों को अपनी असलीयत की पहचान करा देने में यह उपन्यास अत्यंत सफल बना है। इस उपन्यास में छात्र-शक्ति की आक्रमकता, विश्वविद्यालयीन प्रशासन की विसंगतियों के कारण आक्रोश से भरी हुओ युवा-छात्र-पीढी की जुझारु मानसिकता, इस मानसिकता को तोडनेवाले प्रशासकीय सत्ता स्थानों के विविध हथकण्डे देखाने को मिलते है। इस उपन्यासके छात्र नये क्षितिज के निर्माण की तमन्ना में कुचले जाने के भय से आक्रोश से ओतप्रोत और आक्रमक नजर आ रहे हैं। इस उपन्यास में लेखक के अनुभव विश्व की प्रामाणिकता देखने को मिलती है। सच्चाई और वास्तविकता का यहाँ अच्छा समन्वय देखने को मिलता है। इस उपन्यास का छात्र आंदोलन मूल्यपरक लगता है। यहाँ का छात्र-विद्रोह तल्ख एवं हमलावर लगता है। लेखक यहाँ छात्र-क्रांति के पक्षधर तो लगते हैं, बल्कि छात्र आंदोलन की गलत नीति पर भी प्रकाश डालते हैं। यह आंदोलन छात्र निति के नये मूल्यों की तलाश में एक अच्छा प्रयोग लगता है। इस उपन्यास में छात्र विद्रोही मानसिकता की पहचान शिवप्रसादसिंहजी ने हमें करा दी है। इस उपन्यास में परंपरा की लीक को छोड़ दिया है और नयी रचनात्मक जमीन की तलाश में शिवप्रसादजी जुटे हुए लगते हैं। इसमें नया चिंतन, नया अनुभव विश्व और परिवेशगत यथार्थ उभर उठा है। यहाँ व्यवस्था की मारसे रौंदा हुआ युवा-आक्रोश तथा अस्मिता की लड़ाई लडनेवाले छात्र युवाशक्ति की विभिन्न शक्लें ईमानदारी के साथ चित्रांकित की हैं। इस उपन्यास में चित्रित छात्र आंदोलन सामाजिक जीवन की विसंगतियों से और आक्रोश से भरा हुआ हैं।

संदर्भसूची

1) संपादक डॉ. वचनदेवकुमार "अनुवाक्" शोध पत्रिका हिंदी विभाग राँची विश्वविद्यालय अंक–3, 1976, पृ.84

2) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती हैं" राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली द्वि सं.1991 पृ.120

3) वही पृ.227

4) वही पृ.227

5) वही पृ. 122

6) डॉ.वाय्.बी.धुमाळ "साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन (1960–1980) पुणे विश्वविद्यालय – पीएच्.डी. उपाधि के लिए – (अप्रकाशित) पृ. 86–87

7) शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुड़ती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वि. सं. 1991 पृ.157

8) वही पृ.302

9) वही पृ.120

10) वही पृ.120

11) वही पृ.131

12) डॉ.विवेकी राय – समकालीन हिंदी उपन्यास प्र.सं. 1987, राजीव प्रकाशन इलाहाबाद पृ.78

13) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती है" द्वि.सं.1991 राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ.291

14) डॉ.विवेकी राय – समकालीन हिंदी उपन्यास प्र.स. 1987 राजीव प्रकाशन इलाहाबाद पृ.81

15) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती हैं" द्वि.सं.1991 राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली पृ.132

16) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती है" द्वि.सं.1991 ,राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली पृ.325

17) वही पृ.122

18) संपादक डॉ.वचनदेवकुमार "अनुवाक्" शोध पत्रिका हिंदी विभाग, राँची विश्वविद्यालय अंक 3 – 1976 पृ. 82

19) शिवप्रसाद सिंह "गली आगे मुड़ती है", द्वि.सं.1991 राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली पृ. 291

20) वही पृ. 231

21) वही पृ. 348

22) वही पृ. 348 – 349

23) संपादक डॉ.रामदरश मिश्र – हिंदी उपन्यासों के सौं वर्ष गिरनार प्रकाशन, पिलीजी गंज, पृ. 368, प्र.सं. 1984